सपूत	माता	पिता
1. प्रहलाद	कयाधु	हिरण्यकश्यप
2. ध्रुव	सुनीति	उत्तानपाद
3A. दशरथ	इंदुमती	अज
3B. श्री राम	कौशल्या	दशरथ
4. भरत (रामायण)	कैकेयी	दशरथ
5. लक्ष्मण व शत्रुघ्न	सुमित्रा	दशरथ
6. हनुमान	अंजनी	वानर वीर केसरी
7. अंगद (रामायण)	तारा	बाली
8. जमदग्नि	सत्यवती	ऋचीक
9. परशुराम	रेणुका	जमदग्नि
10A. लव-कुश	सीता	रामचन्द्र
10B. तक्ष, पुष्कल	मांडवी	भरत (रामायण)
11. अंगद, चन्द्रकेतु	उर्मिला	लक्ष्मण
12. सुबाहु, शत्रुघाती	श्रुतकीर्ति	शत्रुध्न
13. भरत (महाभारत)	शकुन्तला	दुष्यन्त
14. भीष्म-पितामह	गंगा	शान्तनु
15A. चित्रांगद, विचित्रवीर्य	सत्यवती	शान्तनु
15B. धृतराष्ट्र ———————————————————————————————————	अम्बिका	विचित्रवीर्य

16.	पांडू	अम्बालिका	विचित्रवीर्य
17.	युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन	कुन्ती	पांडू
18.	नकुल, सहदेव	माद्री	पांडू
19.	दुर्योधन एवं अन्य कौरव	गांधारी	धृतराष्ट्र
20.	प्रतिविन्ध्य	द्रौपदी	युधिष्ठिर
21.	सुतसोम	द्रौपदी	भीम
22.	अभिमन्यु	सुभद्रा	अर्जुन
23.	श्रुत कीर्ति	द्रौपदी	अर्जुन
24.	शतानीक	द्रौपदी	नकुल
25.	श्रुत कर्मा	द्रौपदी	सहदेव
26.	योधेय	देविका	युधिष्ठिर
27.	सर्वंग	बलंधरा	भीम
28.	इडावान	उलूपी	अर्जुन
29.	बभुवाहन	चित्रांगदा	अर्जुन
30.	निरमित्र	करेणुमती	नकुल
31.	सुहोत्र	विजया	सहदेव
32.	परिक्षित	उत्तरा	अभिमन्यु
33.	जन्मेजय	माद्रवती	परिक्षित
34.	शतानीक, शंकुकर्ण	बहुष्टमा	जन्मेजय
35.	प्रद्युम्न, चारुदेष्ण	रुकमणी	कृष्ण
36.	अश्वत्थामा	कृपी	द्रोणाचार्य
37.	घटोत्कच	हिडिम्बा	भीम
38.	बर्बरीक (श्यामजी खांटू वाले)	कामकटंकटा	घटोत्कच
39.	महात्मा बुद्ध	महामाया	शुद्धोधन
40.	ऋषभ देव	मरुदेवी	नाभिराज
41	भगवान महावीर	त्रिशला	सिद्धार्थ

42.	कपिलमुनि	देवहूति	प्रजापति कर्दम	
43.	शुकदेव	घृताची	महर्षि व्यास	
44.	अष्टावक्र	सुजाता	कहोड़	
45.	शक्ति मुनि	अरुन्थती	विशष्ठ	
46.	पाराशर	अदृश्यमन्ती	शक्ति मुनि	
47.	द्रोणाचार्य	घृताची	भारद्वाज ऋषि	
48.	कृपाचार्य	जानपदी	शरद्वान ऋषि	
49.	सत्यवान (सावित्री का पति)	शैव्या	अश्वपति	
50.	शतानन्द	अहिल्या	महर्षि गौतम	
51.	शंकराचार्य	आर्यम्बा	शिवगुरु	
52.	चैतन्य महाप्रभु	शची देवी	जगन्नाथ मिश्र	
53.	सन्त ज्ञानेश्वर	रुक्मणी देवी	बिट्ठलपंत	
54	सन्त रविदास घुरबिनिय	या/कलसा देवी	रघू/सन्तोष दास	
55.	गुरु नानक देव	तृप्ता	कालू	
56.	गुरुतेग बहादुर	नानकी	गुरु हरगोविन्द	
57.	गुरु गोविन्द सिंह	गूजरी	गुरुतेग बहादुर	
58.	राणा-प्रताप	जयवन्ती बाई	उदय सिंह	
59.	वीर शिवाजी	जीजा बाई	शाहजी भोंसले	
60.	रामकृष्ण परमहंस	चन्द्रमणि देवी	खुदीराम चटोपाध्याय	
61.	स्वामी विवेकानन्द	भुवनेश्वरी	विश्वनाथ दत्त	
62.	लक्ष्मी बाई (रानी झांसी)	भागीरथी बाई	मोरोपन्त	
63.	अरविन्द घोष	स्वर्णलता	डा. कृष्ण धन घोष	
64.	महात्मा गांधी	पुतलीबाई	<b>करमचंद</b> गांधी	
65.	सुभाष चन्द्र बोस (नेताजी)	प्रभावती देवी	जानकी नाथ	
66.	जवाहरलाल नेहरू	स्वरूप रानी	मोती लाल नेहरू	
(अलग- अलग स्रोतों के अनुसार)				

सुखदेव	श्रीदेवी	रामलाल		
सरदार वल्लभभाई पटेल	लाड बाई	झवेर भाई पटेल		
डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी	योगमाया	सर आषुतोश मुखर्जी		
डॉ. मोक्ष गुंडम विश्वेश्वरैया	बेंकच्चम्मा	श्रीनिवास शास्त्री		
डा. विक्रम साराभाई	सरलादेवी	अम्बालाल साराभाई		
मोरारजी भाई देसाई	विजया बेन	रणछोड़ जी देसाई		
*	* *			
India alone was to be, of all lands, the land of toleration and of spiritualityin that distant time the sage arose and declared ekam sad vipra bahudha vadanti (He who exists is one; the sages call him variously). This is one of the most memorable sentences that was ever uttered,				
	सरदार वल्लभभाई पटेल डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी डॉ. मोक्ष गुंडम विश्वेश्वरैया डा. विक्रम साराभाई मोरारजी भाई देसाई ————————————————————————————————————	सरदार वल्लभभाई पटेल लाड बाई डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी योगमाया डॉ. मोक्ष गुंडम विश्वेश्वरैया बेंकच्चम्मा डा. विक्रम साराभाई सरलादेवी मोरारजी भाई देसाई विजया बेन ** ** **  India alone was to be, of all lands, the and of spiritualityin that distant time and declared ekam sad vipra bahudha		

जगरानी देवी

विद्यावती

चन्द्र शेखर आजाद

शहीद भगत सिंह

67.

68.

पं. सीताराम तिवारी

किशनसिंह

## one of the grandest truths that was ever discovered. -Swami Vivekananda

Spirituality is the master key of the Indian mind. It is this dominant inclination of India, which gives character to all the expressions of her culture. Infact, they have grown output of her inborn spiritual tendency of which her religion is a natural out flowering. The Indian mind has always realized that the Supreme is the Infinite and perceived that to the soul in Nature the Infinite must always present itself in an infinite variety of aspects. -Sri Aurobindo